28.04.2020

तबला एवं पखावज के छात्रों के लिये

टिप्पनी

(1) मुखरा :- संगत करते समय जिस छोटे-छोटे टुकड़े को बजाकर सम पर मिला जाता है, उसे मुखड़ा या मोहरा कहा जाता है। मुख्यतः यह संगत में प्रयोग किया जाता है। ये दो प्रकार के हैं तिहाई युक्त और तिहाई रहित।

(2) कायदा :- वर्णों का नियमबद्ध समूह जिसका अधिक से अधिक विस्तार किया जा सके कायदा कहलाता है। तबला के स्वतंत्र वादन में कायदा का अधिक प्रयोग किया जाता है। यह तबला पर बजने वाले सभी तालों में प्रयोग किया जाता है।

(3) पलटा :- कायदा के विस्तार को पलटा कहा जाता है। इसका विस्तार अधिक से अधिक अपने विद्वता के अनुरूप विद्वान करते हैं।

(4) उठान :- उठान खुले एवं जोरदार वर्णों द्वारा निर्मित होता है। यह किसी भी ताल के स्वतंत्र वादन में बजाया जाता है। स्वतंत्र वादन के शुरुआत में ही उठान बजाने का प्रचलन है। पूरब बाज के तबला वादक इसका अधिक प्रयोग करते हैं।

(5) लग्गी :- यह मुख्यतः कहरवा, दादरा, रूपक आदि तालों में अधिक प्रयोग होता है। इसकी प्रकृति चंचल होती है। लग्गी के पलटों को बोंट कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

EXPT. NO. | NAME: | Page No.:

(6) पेशकार :- यह कठिन लयकारी लिये हुये बोलों का समूह है। इसका प्रयोग पश्चिम बाज के तबला वादक अपने स्वतंत्र वादन के शुरुआत में ही बजाते है। इसकी लयकारी टेढ़ी, मेढ़ी होती है।

(7) रेला :- कायदे के पलटों के किसी एक बोल समूह को लेकर चौगुन या अढ़गुन में बजाने की क्रिया को रेला कहा जाता है। रेला बजाने के लिये काफी अभ्यास और हाथ का तैयार होना आवश्यक है।

(8) रौ :- जब रेले के सम्पूर्ण बोलों को या उसके भाग को ताले आदि के साथ संगति करते समय बिना बिस्तार किये हुये, एक प्रकार से ही बजाते रहे, तो रेले के उस एक बोल को लगातार बजाने कि क्रिया को "रौ" कहा जाता है।

9) तिहाई :- जब कोई बोल किसी स्थान से उठकर तीन बार बजने पर अन्तिम "धा" सम पर आये तो उसे तिहाई कहा जाता है। तिहाईयों दो प्रकार की होती है।
(1) दमदार तिहाई (2) बेदम की तिहाई

दमदार तिहाई :- जिस तिहाई में "धा" के बाद एक या दो मात्रा का ठहराव हो उसे दमदार तिहाई कहते है।

बेदम तिहाई :- जब "धा" के बाद ठहराव बिल्कुल न हो उसे बेदम की तिहाई कहा जाता है।

Scanned with CamScanner